Date - 1 January 2022

साहित्य अकादमी पुरस्कार

- हाल ही में साहित्य अकादमी ने 20 भाषाओं में साहित्य अकादमी पुरस्कार 2021 की घोषणा की। साहित्य अकादमी ने वर्ष 2021 के लिए युवा पुरस्कार और बाल साहित्य पुरस्कार की भी घोषणा की है।

परिचय:

- 1954 में स्थापित साहित्य अकादमी पुरस्कार एक साहित्यिक सम्मान है। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी (नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स) द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।
- अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के साथ-साथ इन भाषाओं में पारस्परिक साहित्यिक अनुवाद के लिए हर साल पुरस्कार दिए जाते हैं।
- भारत के संविधान में शामिल 22 भाषाओं के अलावा, साहित्य अकादमी ने अंग्रेजी और राजस्थानी को भी उन भाषाओं के रूप में मान्यता दी है जिनमें अकादमी के कार्यक्रम को लागू किया जा सकता है।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद भारत सरकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला दूसरा सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है।

पुरस्कार विजेताओं के चयन के लिए मानदंड:

- लेखक की भारतीय राष्ट्रीयता होनी चाहिए।
- पुरस्कार के लिए पात्र पुस्तक / रचना का भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान होना चाहिए।
- जब दो या दो से अधिक पुस्तकों के लिए समान योग्यता पाई जाती है, तो पुरस्कार की घोषणा के लिए साहित्य के क्षेत्र में कुल योगदान और लेखकों की स्थिति/प्रतिष्ठा आदि जैसे कुछ मानदंडों को ध्यान में रखा जाता है।

अन्य साहित्य अकादमी पुरस्कार:

Yojna IAS

- साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार लेखकों द्वारा बच्चों के साहित्य में उनके योगदान के आधार पर दिया जाता है और पुरस्कार वर्ष से ठीक पहले के पांच वर्षों के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों से संबंधित है।
- साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 35 वर्ष या उससे कम उम्र के लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से संबंधित है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार:

- ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार है और इसे सालाना केवल एक भारतीय नागरिक को दिया जा सकता है।
- यह पुरस्कार भारत के संविधान (8वीं अनुसूची) में उल्लिखित अन्य भाषाओं के साथ अंग्रेजी में दिया जाता है।
- पुरस्कार में 11 लाख रुपये की नकद राशि, एक प्रशस्ति पत्र और ज्ञान की देवी वाग्देवी (सरस्वती) की कांस्य प्रतिकृति प्रदान की जाती है।
- यह सांस्कृतिक संगठन भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रायोजित है।
- वर्ष 2018 में, लेखक अमिताव घोष ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता बनने वाले पहले अंग्रेजी भाषा के लेखक बने।
- मलयालम भाषा के अक्कितथम अच्युतन नंबूदिरी को वर्ष 2019 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारतीय पैंगोलिन

- हाल ही में नंदनकानन जूलॉजिकल पार्क (ओडिशा) में सॉफ्ट रिलीज प्रोटोकॉल और रिलीज के बाद निगरानी के प्रावधान के बाद एक रेडियो टैग भारतीय पैंगोलिन जारी किया गया था।
- रेडियो-टैगिंग में एक वन्यजीव की गतिविधियों को एक ट्रांसमीटर द्वारा ट्रैक किया जाता है। अतीत में, बाघ, तेंदुआ और प्रवासी पक्षियों जैसे कई वन्यजीवों को भी टैग किया गया है।

परिचय:

- पैंगोलिन टेढ़े-मेढ़े एंटीटर स्तनधारी होते हैं और उनकी त्वचा को ढकने वाले बड़े सुरक्षात्मक केराटिन स्केल्स होते हैं। यह विशेषता रखने वाले ये एकमात्र ज्ञात स्तनधारी हैं।
- यह इन केराटिन स्केल्स का उपयोग कवच के रूप में शिकारियों के खिलाफ गेंद की तरह लुढ़क कर खतरों से खुद को ढालने के लिए करता है।
- कीटभक्षी – पैंगोलिन निशाचर होते हैं और उनके आहार में मुख्य रूप से चींटियाँ और दीमक होते हैं, जिन्हें वे अपनी लंबी जीभ का उपयोग करके पकड़ लेते हैं।
- पैंगोलिन की आठ प्रजातियों में से, भारतीय पैंगोलिन (मैनिस क्रैसिकुडाटा) और चीनी पैंगोलिन (मैनिस पेंटाडैक्टाइला) भारत में पाए जाते हैं।

Yojna IAS

अंतर:

- भारतीय पैंगोलिन की पीठ पर 11-13 पंक्तियों की धारियों से ढका एक बड़ा एंटीटर है।
- भारतीय पैंगोलिन की पूंछ के नीचे की तरफ एक टर्मिनल स्केल भी होता है, जो चीनी पैंगोलिन में अनुपस्थित होता है।

प्राकृतिक वास:

भारतीय पैंगोलिन:

- भारतीय पैंगोलिन शुष्कक्षेत्रों, उच्च हिमालय और पूर्वोत्तर को छोड़कर शेष भारत में व्यापक रूप से पाया जाता है। यह प्रजाति बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल और श्रीलंका में भी पाई जाती है।

चीनी पैंगोलिन

- चीनी पैंगोलिन पूर्वी नेपाल, भूटान, उत्तरी भारत, उत्तर-पूर्वी बांग्लादेश और दक्षिणी चीन में हिमालय की तलहटी में पाया जाता है।

भारत में पैंगोलिन को खतरा

- पूर्व और दक्षिणपूर्व एशियाई देशों, विशेष रूप से चीन और वियतनाम में इसका मांस व्यापार, और स्थानीय खपत के लिए अवैध शिकार (जैसे प्रोटीन स्रोत और पारंपरिक चिकित्सा) इसके विलुप्त होने के मुख्य कारण हैं।
- ऐसा माना जाता है कि ये दुनिया के स्तनधारी हैं जिनका बड़ी मात्रा में अवैध व्यापार किया जाता है।

संरक्षण की स्थिति

- प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ की लाल सूची- IUCN में, भारतीय पैंगोलिन को लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, जबकि चीनी पैंगोलिन को गंभीर रूप से लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 अनुसूची-I के तहत सूचीबद्ध।
- CITES: सभी पैंगोलिन प्रजातियां लुप्तप्राय प्रजातियों (CITES) में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन के परिशिष्ट-I में सूचीबद्ध हैं।

नंदन कानन जूलॉजिकल पार्क

Yojna IAS

- यह ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से 15 किमी दूर स्थित है। इसका उद्घाटन वर्ष 1960 में किया गया था।
- यह विश्व चिड़ियाघर और एक्वैरियम (वाजा) संघ का सदस्य बनने वाला देश का पहला चिड़ियाघर है।
- 'वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ ज़ू और एक्वेरियम' क्षेत्रीय संघों, राष्ट्रीय संघों, चिड़ियाघरों और एक्वैरियम का एक वैश्विक गठबंधन है जो दुनिया भर में जानवरों और उनके आवासों की देखभाल और संरक्षण के लिए समर्पित है।
- इसे भारतीय पैंगोलिन और सफेद बाघ के प्रजनन के लिए एक प्रमुख चिड़ियाघर के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- तेंदुआ, चूहा हिरण, शेर, चूहे और गिद्ध भी यहाँ पाए जाते हैं।
- यह दुनिया का पहला बंदी मगरमच्छ प्रजनन केंद्र भी था जहां वर्ष 1980 में घड़ियाल को रखा गया था।
- नंदन कानन का राजकीय वनस्पति उद्यान ओडिशा के प्रमुख पादप संरक्षण और प्रकृति शिक्षा केंद्रों में से एक है।

-**SWADEEP KUMAR**

Yojna IAS